Aug 94
4

प्रधानमंत्री श्री पी॰वी॰ नरसिम्हा राव द्वारा
लाल किले की प्राचीर से 48वें स्वतंत्रता दिवस
के शुभअवसर पर दिनांक 15·8·94 को दिया
गया भाषण- लाल किला, दिल्ली

==========

प्यारे देशवासियो,

आप सबको मेरा प्रणाम है । आज 48वें स्वतंत्रता दिवस के शुभअवसर पर मैं आप सबको बधाई देता हूं और यह शुभकामना करता हूं कि आगे हमारे देश का, सारे विश्व का कल्याण हो । आप सब लोग सुखी रहें और आगे देश बढ़े ।

आप जानते हैं पिछले कुछ वर्षों में इतना कुछ परिवर्तन हुआ है सारे विश्व में, कई देशों में जहां के नक्शे बदले हैं और आज एक ऐसी तस्वीर हमारे सामने है जिसको हम पहचान भी नहीं सकते । इतनी तब्दीली सारे देशों में आई है । हम भीइन तब्दीलियों के साथ बदलने की चेष्टा कर रहे हैं । लेकिन अपने जो मूल, मूलभूत सिद्धान्त हैं, जो मूल्य हैं उनको हम छोड़ना नहीं चाहते और हम छोड़ नहीं सकते ।

महात्मा गांधी ने सबसे पहली बात यह हमें बताई थी कि स्वतंत्रता केवल चेंज ऑफ मास्टर्स यानी हमारे मालिकों की तब्दीली नहीं है । बल्कि दरिद्रनारायण के जीवन में जो तब्दीली आती है वही सार है हमारी स्वतंत्रता का । हम उसी ब्रीफ को लेकर उसी शिक्षा को लेकर आगे चलेंगे, चलते आये हैं और चलते रहेंगे । यह मैं आपको आश्वासन देना चाहता हूं । सरकार की यही नीति है ।

तीन साल हुए इस सरकार को आये हुए, थोड़ा ज्यादा हुआ तीन साल से । कई बातें यहां हुई हैं और समय-समय पर मैं आपके सामने निवेदन करता रहा हूं कि यहां क्या-क्या होता रहा है ? कुल मिलाकर आज हमारे देश का चित्र आप देखेंगे तो पता चल जाएगा कि तीन साल में बहुत कुछ प्रगति हुई है और कुल मिला कर देश शान्त है और अपने-अपने काम में लोग लगे हुए हैं । विकास के काम में और देश की उन्नति

...2

के काम में । जो समस्याएं थीं उनको निपटाने के लिए उनका समाधान ढूंढने के लिए भरसक कोशिश की गयी है और की जा रही है, उसमें हम कोई कोताही नहीं करेंगे ।

पंजाब शान्त है और धान के उत्पादन में और कई अन्य विकास के कामों में नम्बर एक पर जैसे हमेशा रहा है, आज भी उसी नम्बर एक पर है । आसाम की समस्या सुलझाई गयी है थोड़ा बहुत बोड़ो लैण्ड की प्रोबलम थी उसको भी निपटाया जा रहा है । कभी थोड़ी झड़प हो जाती है लेकिन कुल मिला कर कोई उसमें परेशानी की बात नहीं है । नार्थ-ईस्ट में हमारे उत्तर-पूर्वी इलाके में जो राज्य हैं वहां कभी-कभी उथल-पुथल होता है और वहां के जो हमारे ट्राईब्स हैं उनमें आपस में कभी-कभी झड़पें हो जाती हैं । लेकिन कुल मिला कर वहां भी हालात हमारे कब्जे में हैं । पूरी तरह से कन्ट्रोल में हैं ।

अब मैं आता हूं कश्मीर पर, जोकि हमारे लिए एक मसला बना हुआ है । पूरी तरह से सुधार नहीं हुआ है । काफी सुधार हुआ है । लेकिन जिसको हम नोरमल्सी कहते हैं, मामूली हालात कहते हैं, वो अभी तक वहां नहीं आये हैं । कारण साफ है कोई बहुत दूर जाकर उसको ढूंढने की आवश्यकता नहीं है । सरहद के उस पार से पाकिस्तान से जो प्रोत्साहन मिल रहा है, जो ट्रेनिंग मिलती है, वहां के आतंकवादियों को, पैसा मिलता है और उनको हथियारों से लैस बनाकर अन्दर भेजा जाता है । यह सभी को मालुम है और अब तो उसमें कोई सन्देह की बात ही नहीं रही है ।

कई साल हुए पाकिस्तान के द्वारा यह जो हो रहा है, उसका सबूत हम इकट्ठा करते रहे और हमारे मित्र देशों के सामने उसे पेश करते रहे, उसको बताते रहे कि पाकिस्तान क्या कर रहा है । अब मैं समझता हूं कि किसी सुबूत की आवश्यकता नहीं है । 18 अगस्त, सन् 94 के बाद अब कोई सबूत किसी के सामने पेश करना आवश्यक नहीं है और क्योंकि उन्होंने ही कहा है कि यह मदद हम देते रहेंगे, इनको हथियार देते रहेंगे । इनको कुमुक पहुंचाते रहेंगे और यह हमेशा ही चलता

रहेगा । इन्होंने, उन्होंने यह कहा है । अब इसके बाद मैं हमारे दोस्त देशों से यह कहना चाहता हूं कि मान्यवर अब क्या कहते हैं आप ? कल तक तो आप थोड़ा बहुत हम पर विश्वास करते थे, कभी-कभी कहते थे कि शायद पाकिस्तान पहले यह कर रहा था । अब नहीं कर रहा है । अभी-अभी कुछ देशों में यह बात मुझे सुनने को मिली । अब मैं उनसे पूंछना चाहता हूं कि आज भी कोई भी कोई सन्देह आपके मन में रह गया है, क्या ?

तो यह साफ है कि पाकिस्तान इन गतिविधियों को रोकना नहीं चाहता, बल्कि बढ़-चढ़ कर बड़े फक्र के साथ सारी दुनिया के सामने कह रहा है कि हम इसे जारी रखेंगे । अब इसका जब सब यही है हम भी उनको यह कहें कि वह जो हमारी, हमारे मामलों में मदाखलत आप कर रहे हैं उस मदाखलत को खत्म किए बिना हम भी चैन नहीं लेंगे । यह बराबर चलता रहेगा, यह हमारा प्रण है, यह हमारी प्रतिज्ञा है, यह हम उनसे कहना चाहते हैं ।

इधर कश्मीर में हमने कई उपाय किए हैं, कई तरह से शान्ति को लाने की कोशिश की है और वहां कोन है यह आतंकवादी इनको आतंकवादी कहे बिना और क्या कहेंगे । कैसे-कैसे लोगों को यह मौत के घाट उतार रहे हैं ? आप यह ज़रा सोच कर देख लीजिए । वकीलों को, डॉक्टरों को और वहां के जो मज़हबी लीडर हैं उन लोगों को और वहां के असैम्बली के, विधान सभा के स्पीकर को मौत के घाट उतार दिया गया । मिडिया इन्सेलेशन्स जो आल इन्डिया रेडियो, दूरदर्शन वहां के कार्यकर्त्ता हैं, कर्मचारी हैं उनको मौत के घाट उतार दिया गया । एक वाइस चान्सलर यूनीवर्सिटी के उनको मार दिया गया और जो सरकारी कर्मचारी हैं जो अपना काम अन्जाम दे रहे हैं उनको सियासत से कोई मतलब नहीं है ऐसे लोगों को भी गोली मार कर उनको खत्म किया गया और जो मासूम वहां के शहरी हैं उनकी तो तो कोई गिनती ही नहीं है । इन इन करतूतों को आप क्या कहेंगे । यह आतंकवाद नहीं तो और क्या है ? और मेरे पास

तो इसके लिए कोई दूसरा शब्द नहीं है और मैं आज इस आतंकवाद को पूरी तरह से खत्म करके ही रहूंगा और आप इस बात पर इत्मीनान रखें।

इधर हमने कईऔर काम वहां शुरू कर दिए हैं। विकास का काम शुरू कर दिया है। सिविल एडमीनिस्ट्रेशन को ठीक करने काम काम जोकि खौफ़ज़दा थे, बंदूक से डरते थे कभी कभी वो काम भी हमने शुरू किया है और यह भी मैं आपको बताऊं कि वहां जो हमारे मतदाता हैं, मतदाताओं की सूची में जो भी बढ़ोत्तरी होनी है, जो भी रिवीजन होना है, वो काम भी हम लेने जा रहे हैं। अगले कुछ दिनों में और वहां जो चुनाव के लिए हल्के बनते हैं, निर्वाचन क्षेत्र बनते हैं, उनके बारे में जो कुछ सुधारना चाहिए, उस काम में हम लगे हुए हैं। इससे पता चलता है, साफ-साफ कि हम किधर जा रहे हैं। हम चुनाव की तरफ जा रहे हैं। मैं कोईतारीख आपको देना नहीं चाहता, क्योंकि मैं जानता हूं कि तारीख के देने से आतंकवादियों को और ज्यादा एक तरह से भड़काव हो जाता है और शायद खून खराबा वो ज्यादा करने की कोशिश करें।

लेकिन हम जिस दिशा में जा रहे हैं जिस दिशा में हम गामजन्य हैं उसमें कोई गलती नहीं है। कोई चूक नहीं है। हम उधर ही जा रहे हैं, यह मैं आपको बताना चाहता हूं। और जब यह सारे काम हो रहे हैं, तो हम यही अपेक्षा करेंगे कि इन्टरनेशनल कम्यूनिटी हमारी इस कार्यक्रम की तरफ देखेगी और समझेगी कि मानवीय अधिकारों को कौन कुचल रहा है। ह्यूमन राइटस को कौन वहां नेस्तनाबूत कर रहा है इसके बारे में उनको अच्छीतरह से जजमेंट करने का मौका मिलेगा यह मैं आपसे कहना चाहता हूं।

यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि न सिर्फ बुरा काम किया जाता है, बल्कि डंके की चोट यह कहा जाता है कि यह बहुत अच्छा काम है हम इसे आगे बढ़ाते रहेंगे। यह भाषा कुछ दोस्ती करने वालों के बीच में ठीक नहीं है। मैं यह अपील करना चाहता हूं, हम ने दोस्ती का हाथ बढ़ाया है और दोस्ती का हाथ जब बढ़ाया है उसे आप कबूल कीजिए। कई बातें हो सकती हैं, हमारे बीच दोस्ती के लिए। कभी कभी कोई मतभेद आते हैं तो उनको निपटाया भी जा सकता है।

लेकिन आप यानी पाकिस्तान हमसे सहयोग करे या न करे । विद यू, विदाऊट यू, इन्स्पाइट ऑफ यू, कश्मीर हमारे साथ रहेगा, हिन्दुस्तान का एक अभिभाज्य अंश है । इसमें कोई फर्क नहीं पड़ेगा, तिल भर का भी फर्क नहीं पड़ेगा और जो कहते हैं कि हम 12 करोड़ हैं, ढाई करोड़ों की बात ही कहनी है तो मैं क्या कहूं । आप समझ सकते हैं, यह करोड़ों की बात नहीं हैं । यह तो न्याय की बात है, एक कानून की बात है । कॉन्स्टीट्यूशन की बात है । इन सबको बदल कर तारीख को बदल कर इतिहास को बदल कर आप उल्टी दिशा में नहीं चला सकते है । यह समझें जितनी जल्दी समझें उतना ही हमारे लिए श्रेयष्कर है । यह मैं बताना चाहता हूं ।

अब हम ज़रा आर्थिक तस्वीर पर गौर करें । तीन साल में क्या क्या प्रगति हुई उसके बारे में मैं समय समय पर आपसे निवेदन करता आ रहा हूं । आज हमारे देश में वो हालात नहीं है जो सन् 71 में थी । हालात बहुत दुरूस्त हुए हैं । एक तरफ हमारे पास विदेशी मुद्रा 51 हजार करोड़ की आज हो गयी है । आप अन्दाजा कीजिए 71 में, सन् 71 में हमारे पास तीन हजार करोड़ थी । तीन हजार करोड़ से 51 हजार करोड़ पर आज पहुंची है । तो यह कोई ऐसे वैसी बात नहीं है । देश की साख कितनी बढ़ी है । इसके बारे में आप अन्दाजा कर सकते हैं और यहां तक की हमने आईएमएफ से जो कर्ज लिया था, इस साल हमने उसको पहले ही चुका दिया । उसकी जो तारीख थी, चुकाने की उससे बहुत पहले हमने चुका दिया । ताकि हमारे पास ब्याज बढ़ता न जाए, उस पैसे पर । और हमने कहा कि ठीक है जब जरूरत पड़ेगी हम लेंगे । लेकिन आज हमारे पास पैसा मौजूद है इसलिए आप वापिस लीजिए । हम यह वापिस करना चाहते हैं । ऐसा कभी हुआ है । बहुत कम देशों में हुआ है । भारत में भी जब इन्दिरा जी प्रधानमंत्री थीं तब एक बार हुआ था और उसके बाद इस साल हुआ है । यह मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह हमारी साख और हमारी सोल्वेन्सी का एक बहुत बड़ा सुबूत है और लोगों को जो अपना विश्वास भारत में बैठ गया

है । बाहर से जो पैसा आ रहा है जो उद्योग लग रहे हैं, बड़े-बड़े अभी महाराष्ट्र में एक दो दिन पहले हमारे क्लीयरेंस दिया गया है, यह कोई 8 हजार करोड़ लागत जिस पर आती है । ऐसे बिजली प्रोजेक्ट पर । मैं चाहता हूं कि ऐसे प्रोजेक्ट और 10-12 आ जाएं । क्योंकि यह पैसा हमारे से मुक्त हो जाएगा । अगर वो न आते, बाहर से पैसा नहीं आता तो यहां के जो हमारे पैसे वाले हैं वो नहीं देते, तो यह सारा पैसा आपसे वसूल करके, सरकार को खर्च करना पड़ता । क्योंकि बिजली के वगैर तो काम चलता नहीं है । यह जो पैसा हम अब बचा है हमारे पास उसका इस्तमाल हम गरीबों के लिए करने वाले हैं, बच्चों के लिए करने वाले हैं, स्कूलों को ठीक करने के लिए करने वाले हैं, पढ़ाई और स्वास्थ्य वगैरह के जो कार्यक्रम हैं उनके लिए करने वाले हैं । यह मैं कहता आया हूं बार-बार । आज एक प्रत्यक्ष प्रमाण आपके सामने मैं पेश कर रहा हूं । इसी प्रकार के अन्य प्रकल्प, कई प्रोजेक्ट आ रहे हैं । और एक लम्बा तांता, एक सिलसिला शुरू हो गया है क्योंकि इस देश पर लोगों का विश्वास बैठ गया है । यहां की परिस्थिति के बारे में, यहां की स्थिरता के बारे में और यहां की अर्थावस्था के बारे में और कानूनी व्यवस्था के बारे में अब वो कायल हो गये हैं कि यहां जाकर पैसा लगाने से इससे कोई नुकसान नहीं है । इसमें कोई जोखिम नहीं है और काफ़ी हमें मुनाफा हो सकता है ।

लोग मुनाफे के लिए आते हैं । उनका भी मुनाफा मिलता है, हमारा भी फायदा होता है । लोगों में, लोगों को रोजगार मिलता है, नौकरी मिलती है, हमारे इन्जीनियर, डॉक्टर ऐसे पढ़े-लिखे हजारों लोगों को यह रोजगार मिलता है । इसलिए हम चाहते हैं कि यह कार्यक्रम आगे चलता रहे । बहुत बड़े पैमाने पर चलता रहे और एक प्रोजेक्ट के कहीं बनने से कोई इम्पेक्ट नहीं होता है । इतना बड़ा देश है, कहीं महाराष्ट्र में हुआ, कहीं आसाम में उसके बारे में लोग बहुत ज्यादा सोचते हैं । फिर आसाम में भी होना है, फिर मद्रास में भी होना है, बम्बई में भी

में भी होना है, दिल्ली में भी होना है, उत्तर प्रदेश में भी होना है । सारे राज्यों में एक प्रकार के प्रकल्प जब आएंगे बड़े-बड़े तब चलेगा, तब पता चलेगा औद्योगिकीकरण किस चीज का नाम और उसकी क्या तस्वीर होती है और यह जो पैसा बाहर से आ रहा है यह हमें कोई आजादी से महरूम करने के लिए नहीं आ रहा है । यह जितने प्रोजेक्ट हैं इसमें हमारे लोगों का भी हिस्सा है यह ज्वाइंट डिवेन्चर्स हैं । हिन्दुस्तान का भी पैसा लग रहा है । बाहर वालों का भी पैसा लग रहा है । कोई 80 प्रतिशत इसमें ज्वाइंट डिवेंचरस हैं । इसलिए जो कहा जाता है कि बाहर से पैसा आएगा और आप उसके, उनके तहत दब जाएंगे यह बिल्कुल गलत बात है । इसमें दोनों का पैसा है, इनका भी है, उनका भी है और यह कहीं भी जाने वाले नहीं हैं । यह प्रोजेक्ट कोई उठा के नहीं ले जाएगा यह प्रोजेक्ट हमारे पास आएगा । तो हमारा होकर रहेगा । और हमारी सोवरेंटी उसका किसी भी प्रकार का धक्का नहीं लगेगा । यह मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं और यह जो प्रकल्प आ रहे हैं पॉवर में आ रहे हैं, बिजली में आ रहे हैं, आयल इन्डस्ट्री में आ रहे हैं । मैटरलिजिकल इन्डस्टरी में जिनकी बड़ी जरूरत है उसमें, उसमें आ रहे हैं, इलेक्ट्रोनिक्स में आ रहे हैं जिनकी अत्यन्त आवश्यकता है हमें और कैमीकल्स वगैरह में आ रहे हैं । इन सभी की आवश्यकता है । यह कोई कम आवश्यक बस्तुएं नहीं हैं । कम आवश्यक उद्योग नहीं हैं । इनकी बड़ी आवश्यकता है ।

अब मैं खेती पर आता हूं । भगवान की कृपा रही, तीन-चार साल से बारिसें अच्छी हुई हैं, फसलें अच्छी हो रही हैं और हमारे किसान आज एक ऐसा करिश्मा करके दिखा रहे हैं शायद किसी देश में ऐसा रिव्यूल्यूशन इस तरह का इन्कलाब नहीं आया होगा । आज हमारी एक समस्या हो गयी है । आपको शायद ठीक, सही न लगे लेकिन अक्षरंश सत्य है कि अभी 10 दिन में, 15 दिन में नई फसल खरीफ की आने वाली है और आने वाले धान को

को तो रखने के लिए हमारे पास जगह नहीं है । यह मैंने इससे पहले भी कहा था । आज मैंने सारे आंकड़े मंगा लिए हैं । शायद आपको पता न हो कि आज लगभग सवा तीन करोड़ टन अनाज हमारे पास मौजूद है, रखने के लिए जगह नहीं है । इसलिए हमें खुले में रखना पड़ेगा । इससे काफी नुकसान भी हो सकता है । लेकिन हमारी मजबूरी है । मैं चाहता हूं कि इस अनाज को अपने बच्चों के लिए अपने स्टूडेंटस के लिए जो हॉस्टलस् में रहते हैं, इस्तमाल करूं । कम से कम दस-पन्द्रह लाख टन मुझे निकालना है, इन गोदामों से । ताकि नये अनाज के लिए वहां जगह पैदा हो और इस पुराने अनाज को जो बहुत अच्छी हालत में है, आज भी हम इस्तमाल करना चाहते हैं । बेचने के लिए आज मौका नहीं है बाहर । हम अपने ही लोगों के लिए इस्तमाल करना चाहते हैं । हम यह चाहते हैं कि कुछ गेंहूं हम दे दें । यहां किसी एम·एफ·आई· जिसको कहते हैं, जो बनाते हैं मार्डन फूड इन्डस्टरी उनको हम देना चाहते हैं । उन्होंने कहा है कि आप हमें एक रूपया कम दाम पर देंगे, तो हम डबल रोटी जो बनाते हैं, ब्रेड जो बनाते हैं उसकी कीमत हम घटा देंगे । मैं यह चाहता हूं कि उनको हम हमारे पास को जो फाज़िल ग़ल्ला है, गेंहूं है दे दें और कीमत घटे डबल रोटी की, कीमत घटे ब्रेड की इसका इन्तजाम में करना चाहता हूं ।

हमारे जो आई:सी·डी·एस· प्रोग्राम हैं बच्चों के आंगनबाड़ी के जो कार्यक्रम हैं गांव-गांव में चलते हैं । लेकिन सारे गांव में अभी फैले नहीं हैं । अगले दो सालों में हम इनको पूरी तरह से फैलाना चाहते हैं देश भर में । वहां के जो बच्चे पौष्टिक आहार उनको दिया जाता है, उस पौष्टिक आहार को और बढ़ाने के लिए और अच्छा बनाने के लिए हम कुछ गेंहूं और ज्यादा देना चाहते हैं, हमारे स्टाक्स में से । ताकि हमारे बच्चों को पौष्टिक आहार कुछ ज्यादा मिले । हमारे पास हजारों हॉस्टलस हैं जिसमें लड़के विशेषकर गरीब लड़के आते हैं, पढ़ते हैं, शड्यूल्ड कास्ट, शड्यूल्डट्राइब, बैकवर्ड क्लास वगैरह उनके पास पैसा नहीं होता दूसरे हॉस्टलस में रहने के लिए । तो कोई सरकारी हॉस्टलस है । कई राज्यों में बड़ी संख्या में हॉस्टलस हैं और हजारों लड़के उसमें रहते हैं अपनी पढ़ाई के लिए । उन लोगों को हम और ज्यादा पौष्टिक आहार देना चाहते हैं

और हमारे पास जो स्टाक मौजूद है उसमें से कुछ देना चाहते हैं ।

इस प्रकार कम से कम दस-पन्द्रह लाख टन की निकासी हमारे पास से होगी और उनका फायदा हमारे बच्चों को, हमारे विद्यार्थीयों को, और लोगों को जो छोटे-छोटे, नन्हें-मुन्हे बच्चें हैं जो आई·सी·डी·एस· कार्यक्रम में हैं उन सबको मिलेगा । यह कार्यक्रम हम बना रहे हैं और अगले कुछ ही दिनों में यह कार्यक्रम चल पड़ेगा आज जो जो समस्या है उस समस्या का इस तरह से हम समाधान निकाल रहे हैं बाहर भेज कर नहीं, बेच कर नहीं । बल्कि अपने ही लोगों को अधिक आहार देने से यह काम हमारा बन जाएगा ।

आपको पता है कम से कम अठ्ठारह सौ ब्लाक्स में हमने नया पीडीएस पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम शुरू किया था दो साल पहले वो बड़े अच्छे ढंग से चल रहा है । और हम चाहते हैं कि वहां भी और ज्यादा गल्ला हम मुहैया करें अनाज मुहैया करें । लोगों को कुछ कम कीमत हम देते हैं और यह जो कार्यक्रम पहले चल रहा था उसमें जो खामियां थीं, यह सार्वजनिक वितरण प्रणाली में, उनको ठीक करने के लिए कई तो हमने गोदाम बनवाये हैं, कई तो हमने गाड़ियां दी हैं, राज्य सरकारों को, जिनमें यह गल्ला लाद लाद कर दूर दराज के इलाकों में पहुंचाया जाय । बहुत बड़ा कार्यक्रम है यह । तफ्सील बताने के लिए वक्त नहीं है । लेकिन मैं आपको आश्वासन देता हूं कि इस प्रकार का कार्यक्रम बृहद् कार्यक्रम इससे पहले शायद ही हुआ हो और आगे इसको बढ़ाना चाहते हैं और इन ब्लाक्स में बढ़ोत्तरी करना चाहते हैं इस साल कोई 18 सौ हैं तो अगले साल हम 20-20, हम दो हजार कर सकते हैं और इस तरह से यह कार्यक्रम सारे देश में हम फैलाना चाहते हैं ।

अब आपको पता है कि हमने इस पंचवर्षीय योजना में तीस हजार करोड़, तीस हजार करोड़ हमने जुटाया है और एक साल में सात हजार करोड़ से भी ज्यादा दिया जा रहा है । मेरे पास लोग आते हैं गांव से, कहते हैं कि साहब हमारे गांव में हमने इतना पैसा कभी नहीं देखा । बहुत उमर से आते हुए दिल्ली से आते हुए । एक एक जिले में कलेक्टरों के पास

इस वक्त 40 करोड़, 45 करोड़, 50 करोड़ । इस तरह से पैसा वहां है और वहां सार्वजनिक कामों में वो लगा रहे हैं और हमें लगता है कि वहां एक इन्कलाब होने वाला है । हो रहा रहा है गांव-गांव में यह इन्कलाब पहुंचा है । आपकी पंचायतों का जो स्थापन वहां हो रहा है इन पंचायतों के हाथों में यह पैसा जाएगा । इसमें से बहुतेरा पैसा वहां जाएगा और वहां के जो विकास के कार्यक्रम में वो जो भी करना चाहे, लोगों की भलाई के लिए जो भी उनकी प्राथमिकता हो उसके अनुसार काम होगा । यह मैं आपको बताना चाहता हूं और इनको भी विश्वास दिलाना चाहता हूं कि पैसे की कमी उतनी नहीं रहेगी लेकिन यह पैसा कैसे आप खर्च करें यह वहां के लोगों को देखना है, वहां की पंचायतों को देखना है, वहां के नेतृत्व को देखना है । कोई यहां से जाकर उस पर तनकी नहीं करेगा। शायद कभी-कभी लोग चले जाएं लेकिन उससे काम नहीं चलेगा। वहां के लोगों को ही इसकी निगरानी करनी पड़ेगी बाद में फिर यह शिकायत नहीं होनी चाहिए कि यह सब कुछ ठीक तौर से खर्च नहीं हुआ । इसलिए मैं पहले ही आगाह करना चाहता हूं कि आप चौकस रहें । गांव-गांव के लोग चौकस रहें । वहां के नौजवान चौकस रहें, वहां के सरपंच वगैरह अपना कर्तव्य पूरी तरह से निभायें तो यह कार्यक्रम बड़े सुचारू रूप से चल सकता है । अगली पंच वर्षीय योजना में जो इस और ज्यादा पैसा इसमें लगाने वाले हैं ।

मैंने पिछले साल तीन नई स्कीमों के बारे में यहां घोषणा की थी । आपको पता है इससे पहले हमारे पास कई योजनाएं जो राजीव जी शुरू की थीं वो चल रही हैं, जवाहर रोजगार योजना, नेहरू रोजगार योजना, इन्दिरा आवास योजना, इस प्रकार की कई योजनाएं उन्होंने चला रखीं थी और वो आज भी जोर-शोर के साथ चल रही हैं । उनमें कोई कमी नहीं है, उनके साथ साथ पिछले साल मैंने तीन नई योजनाओं का की घोषणा की थी और वो भी बहुत अच्छी तरह से चल रही हैं । इन तीनों योजनाओं में एक योजना है हमारी बहनों के लिए,

महिलाओं के लिए जिनको महिला समृद्धि योजना कहते हैं । आपको यह सुनकर ताज्जुब होगा कि एक साल के अन्दर बल्कि आठ नौ महीनों के अन्दर इस देश में हमारी महिलाओं ने, हमारी बहिनों से, 13 लाख अपने खाते खोल दिये हैं डाकखानों में । अब आप कहेंगे करोड़ों में, 13 लाख क्या होता है ? मैं मानता हूं । लेकिन अगर आठ महीने में अगर 13 लाख महिलाओं ने खुद जाकर वहाँ के डाकखानों में अपने नाम से खाते खोले होंगे तो इसका क्या मतलब है । इसका मतलब यही है कि यह कार्यक्रम उन्हें बहुत भाया है । बहुत अच्छा लगा है, बड़े उत्साह में वो यह काम कर रहे हैं और यह भी मैं आपसे बताना चाहूं कि 13 लाख में कम से कम दो लाख केवल हमारे शैड्यूल्ड ट्राइब एरिया में से हैं । तो आप सोच सकते हैं कि यह जो चेतना जो है कहां कहां पहुंची है और कहां पहुंचने वाली है । कुछ राज्यों में तो यह काम बहुत ही अच्छा हुआ है । लेकिन कुछ राज्यों में बहुत कम हुआ है, नगण्य है वहां तो शुरू ही नहीं हुआ है । ऐसा कहना चाहिए । मैं उन राज्यों के मुख्यमंत्रियों से अपील करना चाहता हूं बहुत कुछ हो चुका आपसी झगड़े हुए खून खराबा हुआ यह कार्यक्रम जो हम ले रहे हैं इनमें कोई पार्टी का मामला नहीं है । एक दूसरे के प्रति कोई द्वेष करने का मामला नहीं है । यह तो लोगों के लिए है, वहां की महिलाओं के लिए है । यह आप आगे बढ़ाइए अपने लोगों को कहिए या अपनी पार्टी को कहिए या अपने अनुयायियों से कहिए या अपने नौजवानों से कहिए कि जब दूसरे राज्यों में हो रहा है तो हमारे राज्यों में क्यों न हो । इसलिए आप उसे आगे बढ़ाइए ।

दूसरा कार्यक्रम है गांवों में जो बेकारी होती है, सारे 365 दिन लोगों को वहां काम नहीं मिलता रोजगार नहीं मिलता, आप जानते हैं । तो जहां ऐसी हालत है कम से कम सौ दिन के लिए वहां इस रोजगार उनको मुहैया करें यह कार्यक्रम था । वो भी बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है और जो हमारे पास रिपोर्टें आ रही हैं । उससे बहुत आशाजनक वहां परिस्थिति है । वहां लोगों में आज बेकारी की बात अब नहीं रही । जहां जहां यह कार्यक्रम शुरू हुए हैं और वहां से लोग निकल कर शहरों में जो चले आते थे जब बेकारी का समय होता था वो

बात अब रुक गयी है । क्यों कि हमने वहां कई कार्यक्रम उठाये हैं । जैसे सड़कों का कार्यक्रम छोटे-छोटे तालाबों का कार्यक्र।, मदरसे वहां जो हमारे स्कूल हैं उनकी इमारतें बनाने का कार्यक्रम इस प्रकार के कार्यक्रम वहां ले रहे हैं । लोगों का भी फायदा हो रहा है, गांवों का भी फायदा हो रहा है । और वहां काफी मात्रा में रोजगार भी मिल रहा है ।

तीसरा कार्यक्रम था नौजवानों के लिए थोड़ा पढ़े-लिखे नौजवानों के लिए शहरों में कोईआठवीं तक पढ़ा हो, कोई नौवीं तक पढ़ा हो, कोई मैट्रिक तक पढ़ा हो तो एक लाख रुपया देने का कार्यक्रम है । एक लाख उसको कर्ज दिया जाएगा जिसमें साढ़े सात हजार सब्सिडि होगी, माफी होगी, ट्रेनिंग देने के लिए छोटे-छोटे कारोबार हैं, जैसे कोई साइकिल का कारखाना हो, जैसे कोई और इस तरह के छोटे-छोटे धन्धे हों दुकान हो, इस तरह की चीजें खोलने के लिए उनकी मदद की जाएगी । पिछले साल हमने अपना लक्ष्य रखा था कोई चालीस हजार ऐसे नौजवानों को हम हम देना चाहते थे । चालीस हजार के मिल झुमले आज मुझे कहते हुए खुशी होती है कि कोई 32-33 हजार नौजवानों को यह मिल चुका है । पैसा मिल चुका है और उनको ट्रेनिंग भी मिल चुकी है और वो अपने काम में लगे हुए हैं । इस साल हम इस तादाद को बढ़ कर दो लाख करना चाहते हैं उसके लिए पैसा जुटाया गया है । फिर आपसे यही गुजारिश करूंगा उन राज्यों में जहां यह काम बिल्कुल नहीं चल रहा है अब उनके नाम लेना ठीक नहीं है पब्लिक में । लेकिन हैं ऐसे राज्य जहां इस पर किसी का ध्यान अभी तक गया नहीं है । जिन राज्यों में काम चला है बहुत अच्छी तरह से चला है । मैं उनको धन्यवाद देता हूं । जहां नहीं चला है वहां के मुख्यमंत्रियों से वहां के लोगों से मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इस कार्यक्र म में आप आगे बढ़िए पैसा मौजूद है, प्रावधान मौजूद है । तब्जोंकी जरूरत है, ध्यान देने की जरूरत है । यह तीन कार्यक्रम बहुत अच्छी तरह से चल रहे हैं । अब हमने सोचा इस साल कि कोई ऐसा कार्यक्रम है ऐसे कोई औरकार्यक्रम हैं जिनके बारे में हम सोच सकते हैं जिनका कार्यान्वयन कर

सकते हैं । हमें लगा कि कुछ ऐसे कार्यक्रम हैं जिनको इनमें शरीक करना चाहिए । बच्चों का जो कार्यक्रम है यह छूट गया था पिछले साल आज उसे हम जोड़ना चाहते हैं ।

आपको पता है हमारे देश में कोई दो करोड़ बच्चे ऐसे हैं जिनको स्कूल में रहना चाहिए । लेकिन स्कूल में नहीं हैं । वो अपने माता-पिता की आमदनी को बढ़ाने के लिए कारखानों में काम करते हैं । अब कारखानों में काम शुरू हो गया, पढ़ाई बन्द हो गयी तो हमेशा के लिए इसकी तरक्की रुक गयी । यह तो मान कर चलना है । यह बहुत बुरी बात हमारे आने वाली पीढ़ियों के लिए इसलिए हमने यह कहा कि इनमें से जो जोखिम वाले उधोगों में जैसे रजाई बनाना, जैसे कारपेट विविंग इस तरह के उधोग हैं, जिनमें छोटे-छोटे बच्चे काम करते हैं और उनका स्वास्थ्य खराब हो जाता है । बड़ी जोखिम के काम हैं यह । उन लोगों को वहां से हटाना है, उन लोगों को हटा कर स्कूल भेजना है, कुछ पढ़ाई लिखाई उनकी करनी है, उनको ट्रेनिंग देना है कम से कम कुछ दस्तकारी में, ऐसे कामों में जिनमें वो अपना पेट भर सकें । आगे यह कार्यक्रम हम ले रहे हैं । 20 लाख लड़के ऐसे हैं जो ऐसे खतरनाक कामों में लगे हुए हैं जिनसे उनके हैल्थ पर, उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ सकता है । तो इन 20 लाख लड़कों को अगले पांच साल या चार साल के अन्दर हम उन उधोगों से हटा कर स्कूल ले जाना चाहते हैं । इनका एक ही उपाय है कि उनके जो माता-पिता हैं जो गरीब हैं, जो इस बच्चे के आमदनी के बिना नहीं रह सकते हैं, उनका गुजारा नहीं हो सकता है । तो ऐसे लोगों को हम पूरी तरह से काम में लगा दें, उनकी आमदनी बढ़ायें, मां-बाप की तो कौन मां-बाप ऐसे हैं जो अपने बच्चों को जो स्कूल भेजना नहीं चाहते । सभी भेजना चाहते हैं, मजबूरी है । उन मजबूरियों को दूर करने में हम लगे हुए हैं । यह कार्यक्रम एक बना है और इस कार्यक्रम के द्वारा इन छोटे-मोटे, छोटे बच्चों को जिनकी जिन्दगी आज खराब हो सकती है, इन कामों में पड़ कर हमेशा के लिए उनको हम ठीक करना चाहते हैं । यह एक कार्यक्रम जिसकी आज मैं घोषणा कर रहा हूं अगले कुछ दिनों में शुरू होने वाला है । इसके पूरे, पूरी तैयारियां इसकी हो चुकी हैं ।

दूसरा एक कार्यक्रम मैं लेनाचाहता हूं बड़े-बड़े शहरों में तो ठीक है कॉरपोरेशन हैं, पैसा भी मिलता है उनकी आमदनी भी होती है । गांव के बारे में तो मैंने कहा ही है । गांवों के लिए हमने काफी कर रखा है, प्रावधान लेकिन यह छोटे छोटे कस्बे हैं एक लाख आबादी के, पचास हजार आबादी के, डेढ़ लाख आबादी के, वो न तो शहर हैं न गांव हैं । दोनों की जो बुरी बातें हैं वो आप वहां देखेंगे । दोनों के बीच में उनको कोई पूछने वाला नहीं है क्योंकि उनकी आमदनी इतनी नहीं है कि वहां जो सिविल एमिनिटीस वो दे सकें और फिर उनकी हालत बदतर होती जा रही है । लोग आज भी गांव से वहां आते हैं । वहीं बस जाते हैं, झुग्गी-झोंपड़ी बन जाती हैऔर बिल्कुल इतनी बदहालीयत वहां हो जाती है कि वहां रहना, वहां के लोगों के स्वास्थ्य पर और सभी चीजों पर असर पड़ जाता है । हम इस वक्त ऐसे तीन सौ, तीन सौ शहरों को छोटे शहरों को एक लाख आबादी तक जिनकी है उनको लेना चाहते हैं और उनकी बेहतरी केलिए लगभग कोईआठ सौ करोड़ रूपया खर्च करेंगे अगले पांच साल में, और उनके प्राथमिकता देकर वहां के हालात को सुधारने की कोशिश करेंगे । वो स्कीम पूरी हो रही है । कल मैंने देखा है कि वो अच्छी तरह से बना है । अब उसे हम कार्यान्वित करेंगे ।

अब एक ऐसे, ऐसे अहम दो तीन मुद्दे हैं जिनको मैं उठाना चाहूंगा । हमारे मायनोरटीज के सिलसिले में, बहुत कुछ हमने कार्यक्रम चुपचाप उठाया है बहुत ज्यादा उसका मुजाहिरा नहीं किया है । बहुत एडवरटाइज नहीं किया है । लेकिन इतना कहना चाहता हूं कि जिस रैपिड एक्शन फोर्स के बारे में लोगों के, लोगों की जान माल की हिफाजत के लिए जो बना है । मैंने घोषणा की थी पिछले साल उसका डबल हमने करके दिखाया है । कोई पांच बटालियन की बात हम कर रहे थे । हम दस बटालियन अब तक कर चुके हैं और उनकी तैनाती भी अलग अलग जगहों पर कर चुके हैं । जो मैं आपको पढ़ कर सुनाता हूं । हैदराबाद, अहमदाबाद, इलाहाबाद, बेलगांव, दिल्ली, अलीगढ़, तिरूअनन्तपुरम्, जमशेदपुर, भोपाल, और मेरठ, ऐसी जगहों पर उनकी तैनाती अमल में आनी है । उनमें कुछ महिलाओं के विभाग भी हैं और

उनकी भी आवश्यकता पड़ती है ।

कभी कभी वहां के वहां की हालात को सुधारने के लिए तो आज दस बटालियन हमारे पास तैनात हैं आगे जरूरत होगी और भगवान न करे इनकी जरूरत हमें पड़े क्योंकि सब अमन-चमन के साथ रहते हैं तो इनकी जरूरत नहीं पड़ती है । लेकिन फिर भी हम चौकस रहेंगे और इन दस्तों को और ज्यादा बढ़ाने की कोशिश करेंगे जहां कहीं हमें इस बात की जरूरत लगी । तो हम उसमें आगे पीछे नहीं करेंगे । इनको खासतौर से ट्रेनिंग दी जाती है । इनको देख-परख कर चुना जाता है और यह हर काम के लिए तैयार रहते हैं ।बहुत जल्दी जहां कहीं कोई राइट हुआ कोई फ़साद हुआ । तो एकदम वहां पहुंच जाते हैं और उस पर काबू पा जाते हैं । इसके लिए खासतौर से इनको ट्रेनिंग दी गयी है और मैं समझता हूं कि इनके कारण ऐसे फ़सादाद बहुत ज्यादा नुकसान करने से पहले ही काबू में लाये जा सकते हैं और जाये जाएंगे और जैसा मैंने कहा इनको और भी बढ़ाया जा सकता है ।

माइनॉरटी कमीशन के बारे में मैंने कहा है बार-बार कहा है आप यह जानते हैं वो कानूनी अब बन गया है और माइनॉरटीज़ के तालीमी इदारों के बारे में और उनकी सहूलियतों के बारे में पूरी तरह से हम सावधान हैं । मौलाना आजाद के नाम पर जो हमने संस्था की है वो आपको पता है और कई ऐसी संस्थाएं जिनमें माइनॉरटीज़ की तालीम का खासतौर से ख्याल किया गया है, ख्याल रखा गया है । मैं उन सारी तफ़सीलों में नहीं जाना चाहता क्योंकि उनका उल्लेख हो चुका है, उनका जिक्र इससे पहले आ चुका है । एक बहुत बड़े कार्यक्रम पर मैं आज तवज्जो दिलाना चाहता हूं । वह जो कॉरपोरेशन है जिनसे माइनॉरटीज़ को मदद मिलती है और उनकी तालीम के लिए और उन उनके उद्योगधन्धों के लिए सभी चीजों के लिए मिल सकती है । ऐसा कॉरपोरेशन एक बनाना चाहते थे । पिछले साल मैंने उसकी घोषणा की थी उसमें कुछ कानूनी रुकावटें आईं हमने बहुत कुछ कोशिश की और आज यह कहते हुए मुझे खुशी हो रही है कि सारी रुकावटें दूर हो गयी हैं और यह

00026

कॉरपोरेशन "नेशनल माइनॉरटीज़ फाइनेंस एण्ड डिवलपमेंट कॉरपोरेशन" पांच सौ करोड़ ऑथोराइज़ कैपिटल के साथ अब आयगा, फैसला हो चुका है । कैबिनेट में इसमें क्लीयरेंस दिया जा चुका है । अगले कुछ ही दिनों में इसका स्वरूप आप देखेंगे यह आपके सामने खड़ा हो जाएगा । यह संगठन खड़ा हो जाएगा और इससे मैं चाहता हूं कि लाखों हमारे माइनॉरटीज़ के लड़के नौजवान हैं उनका फायदा होगा और होनाचाहिए तो एक यह एक बहुत बड़ा मेरा वायदा था । पिछले साल मेरा किया हुआ मुझे कुछ फिक्र लग रही थी कि इसमें क्यों देर हो रही है । मैंने खुद उस पर देख परखकर उसकी सारी रूकावटों को हटाने की कोशिश की हम उसमें कामयाब हुए और यह संस्था आपके सामने अब आ रही है ।

एक और खुशखबरी सुनाऊं । आज दूरदर्शन से आप ।। ज़बानों में ।। भाषाओं में प्रोग्राम देख सकते हैं, टेलीकास्ट होने वाला है । पिछले साल मैंने पांच की घोषणा की थी शायद मुझे याद पड़ता है आज ।। की घोषणा कर रहा हूं और ।। के लिए कोई ।। एन्टेना आपको रखने की जरूरत नहीं है । आप दिल्ली में बैठ कर अपने ही डिश ऐन्टीना पर कलकत्ते का कार्यक्रम देख सकते हैं । मद्रास का देख सकते हैं, हैदराबाद का देख सकते हैं बम्बई का देख सकते हैं यह बहुत बड़ी प्रगति है, दूरदर्शन के काम में और मैं समझता हूं कि अगले कुछ महीनों में ।। की बजाय यह 13 भाषाएं हो जाएंगी और सब भाषाएं और सब भाषाओं के सारे प्रोग्राम जहां जहां देश में हों, उनको आप अपने डिश ऐन्टीना के जरिए से अपने टीवी पर देख सकते हैं । यह कहते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है ।

डिफेंस के मामले में, सुरक्षा के मामले में कल शाम मैंने सम्बोधित किया था हमारे नौजवानों को, । उनको पूरा प्रोत्साहन हम से मिलेगा और उनके लिए हथियारों की जो आवश्यकता है आधुनिकतम जो हथियार होंगे और दूसरे कई उपकरण होंगे वो सारे जुटाये जाएंगे और उनको किसी तरह से भी भी शंका करने की कोई बात नहीं है । वो सरहद पर भी काम कर रहे हैं, देश के भीतर भी लोगों की मदद कर रहे हैं । और अन्य देशों में भी काम कर रहे हैं जहां उन्होंने हिन्दुस्तान क

के लिए एक बहुत बड़ा नाम पैदा किया है, बना लिया है उनके मन में अपना स्थान चाहे कम्बोडिया हो, चाहे सोमालिया हो, जहां कहीं हम उनको भेजें मैं उनको फिर एक बार बधाई देता हूं और उनको आश्वासन देता हूं कि उनकी मदद करने में हम कोईकुताही नहीं करेंगे । कोई कम नहीं करेंगे । फौज वही है जो आधुनिकतम हथियारों से लैस हो और जिसके लड़ने में किसी प्रकार की शंका न रहे, किसी प्रकार का डर न रहे । हमारे जो भी दस्ते हैं, जो भी हमारी सेनायें हैं उन सबको मैं फिर एक बार बधाई देते हुए यह आश्वासन देना चाहता हूं । उनके जो टर्मस और कन्डीशनस ऑफ सर्विस हैं उनको भी कुछ इम्प्रूव करने करने की हमने कोशिश की है । लेकिन अभी आयोग आ रहा है, वेतन आयोग वो शायद और ज्यादा गहराईयों में जाकर इस बात को देखेगा और मैं सोचता हूं कि पैसे से नहीं यह किया जा सकता यह तो देशभक्ति का काम हैऔर हम हमारे जो नौजवान हैं, सरहदों पर हैं, अन्दर हैं, हर जगह हैं, वो देशभक्ति का अपना मुजाहिरा कर रहे हैं, देशभक्ति का अपना सबूत दे रहे हैं यही मानकर चलता हूं फिर एक बार मैं उनको बधाई दूं ।

अब थोड़ा मैं विदेशी मामले के बारे में मैं कुछ कहूं । आज भारत सारी दुनियां में जितने देश हैं, सबसे मित्रतापूर्ण संबंध बनाये हुए है । पिछले तीन साल में मैं, मैंने कई देशों का दौरा किया । अमरीका, रशिया, चाइना, इग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस, जापान, ईरान, कोरिया, उज़बेकस्तान, कज़ाकिस्तान, मौरिशस, इन्डोनेशिया आदि ओमान आद कई देश हैं जहां मुझे जाकर बड़ी खुशी हुई कि भारतके प्रति उन देशों का सम्मान है, आदरहै और हमारे साथ बहुत कुछ उनका को-औपरेशन उनका सहयोग बढ़ रहा है, आर्थिक क्षेत्र में, बहुत तेजी से बढ़ रहा है मैं आपको बताऊं कि पिछले साल के मुकाबले इस साल में कई गुना बढ़ा है । तीन साल के अन्दर जो को-औपरेशन हमको मिला है बाहर से उससे पहले दस सालमें मिला था उस उसका दुगना मिला है तीन साल में । मैं कोई तकाबुल करना नहीं चाहता । लेकिन आंकड़े बताते है कि यह ऐसा हुआ है

आगे बहुत बड़े पैमाने पर यह होने वाला है । मैं सिंगापुर जा रहा हूं । वियतनाम जा रहा हूं, मलेशिया जा रहा हूं । हमारे सभी से मधुर संबंध बने हुए हैं । अब एक पाकिस्तान की बात है सो मैं अर्ज़ कर चुका हूं । हमारे सारे पड़ौसियों से हमारे संबंध अच्छे हैं । फिर एक बार मैं पाकिस्तान के हमारे दोस्तों से कहूंगा कि हमारा बढ़ाया हुआ हाथ, मित्रता का हाथ आप ले लीजिए, कबूल कर लीजिए, उसको दुतकारिये नहीं, आखिर हमें रहना है, हम-साया बन कर, रहना है पड़ौसी बन कर । हम अपने पड़ौसियों को, दूर नहीं भेज सकते । जहां आप हैं आप रहेंगे; जहां हम हैं, हम रहेंगे । हमारे प्रक्षेमास्त्रों के बारे में, हमारे मिसाइल प्रोग्राम के बारे में बड़ा हल्ला है । बड़ा प्रचार हो रहा है । भई अजीब बात है । पाकिस्तान के पास बने-बनाये, खरीदे हुए, ऑन दी शेल्फ लिए हुए यही प्रक्षेमास्त्र मौजूद हैं । उसके कोई चर्चा नहीं करता । हम प्रयोगशाला में उस पर कुछ तजुर्बा करना चाहते हैं कुछ टैस्ट कर रहे हैं तो उस पर हल्ला होता है । यह कैसा न्याय है हमारी समझ में नहीं आता ।

हमने कहां बहुत ज्यादा बढ़ाया है पैसा । खर्चा कहां, बढ़ाया है डिफेंस पर । हिन्दुस्तान कोई छोटा मुल्क है । और इतने बड़े मुल्क के लिए, इतने बड़े देश के लिए हमारी सीमाएं कितनी लम्बी हैं । हमारा साहिल कितना लम्बा है और हमारी आवश्यकताएं कितनी हैं । इन सारी चीजों को ध्यान में रखते हुए क्या मेरा यह अधिकार नहीं है, यह मेरा फर्ज़ नहीं है कि इतने बड़े देश की सुरक्षा के लिए जिस प्रकार की आवश्यकता हो, उस प्रकार की आवश्यकता मैं जुटाऊं, कोई कुछ कहे यह तो मैं जुटा कर रहूंगा । हमारा सबसे बड़ा पहला प्राथमिक कार्यक्रम है देश की सुरक्षा । इसमें कोई गुंजाइश नहीं है, घटाने की । इसमें कोई गुंजाइश नहीं है समझौता करने की। इसलिए मैं कहना चाहता हूं हमारे दोस्तों से कि आप हिन्दुस्तान का तकाबुल और देशों से मत कीजिए । हिन्दुस्तान को हिन्दुस्तान के मियार पर यहां के प्रमाण पर आप देखिए । और देखिए हमने बल्कि हमारे साइज़ के देशों के मुकाबले में बहुत कम खर्च किया है, बहुत कम खर्च कर रहे हैं ।

तो किसी और छोटे देश से हमारा मुकाबला करना और यह कहना कि यह आपत्तिजनक कीजिए यह कोई न्याय की बात नहीं है हमारे दफा के लिए, हमारे डिफैंस के लिए, जो कुछ चाहिए वो किया जाना चाहिए और किया जाएगा इसमें कोई संदेह की बात मैं नहीं पाता हूं । मैं आपको बताना चाहता हूं कि सारा विश्व बदल रहा है । मैं मानता हूं विश्व बदल रहा है । लेकिन कहीं कहीं विश्व नहीं बदलता है । कुछ लोगों की ज़हनीयत नहीं बदलती है । आज मैं तैयार हूं कि हम राजनीति को छोड़ कर बल्कि राजनीतिक जो हमारे संबंध राजनयिक जो संबंध होते हैं डिप्लोमेटिक रिलेशन्स वो तो खाली बातों की हद तक होते थे या सिद्धान्तों की हद तक होते थे । आज हमारे संबंध आर्थिक बन रहे हैं । उन आर्थिक संबंधों को हम सार्क में क्यों नहीं बढ़ायें । क्यों पाकिस्तान को इतना बुरा लग रहा है । इतना पशोपेश हैं । सार्क का जो हमारा नेटवर्क है सात मुल्कों का चलिए उसी में हम एक दूसरे से सहयोग करें । वो भी नहीं होता ये भी नहीं होता । जहां जाते हैं पाकिस्तान के हमारे दोस्त कश्मीर की बात उठाते हैं । मैंने तो छोड़ दिया है कश्मीर की बात कहीं भी उठाना या किसी का जवाब देना । क्योंकि वो आगे बढ़ते हैं तो कोईआवश्यक नहीं है कि हर बार हम इसका जवाब देते रहें । सारी दुनिया के लोग उनकी भी बात जानते हैं । हमारा जवाब भी जानते हैं और यहां क्या हो रहा है फील्ड लेवल पर वो भी जानते हैं । किसी से यह बातें छिपी नहीं है । यह तो खाली हम दोहराते चले जाते हैं । इसकी कोई आवश्यकता नहीं है । अभी सुनता हूं कि कोई स्वास्थ्य मंत्री उनके एक सम्मेलन में पाकिस्तान कश्मीर की बात उठाने वाला है । अब कहीं भी कोई सम्मेलन हो वहां कश्मीर की बात उठेगी तो जग हंसाई हो जाएगी ।

मैं कहना चाहता हूं हमारे दोस्तों से हमारा खूनी रिश्ता है । इस खूनी रिश्ते के वास्ते से मैं कहना चाहता हूं कि खुदारा ऐसा मत कीजिए । हम बैठकर इन चीजों को सुलझा सकते हैं । आप जो कहते हैं कि अनफिनिश्ड टास्क रह गया है । क्या अनफिनिश्ड टास्क है । हां, मेरी राय में, मेरी दानिस्त में और हमारे नुक्तेनज़र से एक अनफिनिश्ड टास्क नहीं है कि

कश्मीर के जिस हिस्से पर पाकिस्तान का कब्जा है वो कब्जा हट जाए और वो हमारे भारत में शरीक हो जाए । यही अन-फिनिश्ड टास्ट रह गया है और कोई अनफिनिश्ड टास्क नहीं है । (तालियां) आप यह नहीं ले सकते, छोड़ दीजिए इस बात को, शिमला एग्रीमेंट मौजूद है । आइए बैठिए हाथ मिलाइए और हम मिलकर आगे बढ़ सकते हैं कन्धे से कन्धा मिला कर । यह जो सम्भावनाएं हैं, यह जो पॉसीबिलटीज हैं, यह जो चित्र हमारे सामने सुहाना नजर आता है, उसको ठुकराइए नहीं । लेकिन ठीक है आपकी मर्जी है । लेकिन हम अपनी जगह हैं कायम हैं, रहेंगे और कश्मीर हमारे हिन्दुस्तान का हिस्सा होकर दवामन्द रहेगा यह मैं आपको बताना चाहता हूं ।

मैं कोई धमकी की भाषा नहीं कह रहा हूं । मैं एक स्थिरता की बात कर रहा हूं । ठण्डे दिल से कर रहा हूं । सोच समझ कर आशा अगर नहीं बदलती कम से कम उद्देश्य बदलें, नीयतें बदलें, तो अच्छा है । कभी कभी भाषा बोलने पर मजबूर भी हो जाते हैं । कुछ लोग वो नहीं बोली जाती भाषा । तो लोग उन पर उलट पड़ते हैं ऐसी भी मजबूरियां हैं कुछलोगों की मैं जानता हूं । यहां हमारे पास कोई मजबूरी नहीं है । लेकिन और लोगों, और देशों में हो सकती है । लेकिन कम से कम उद्देश्य तो उनके ठीक हों, पूरम्न हों, शान्तिमय हों, हम शान्ति भी चाहते हैं और साथ ही साथ अपनी सोवरेन्टी भी चाहते हैं । इन दोनों में कोई समझौता हम नहीं करना चाहते हैं ।

एक आखिरी बात मैं आपसे कहूं । हमारा स्वातन्त्र्य संग्राम बड़ा लम्बा चला । इसलिए लम्बा चला कि अहिंसा पर आधारित था । यह तो कोई दो चार महीने में खत्म नहीं हुआ । सालों साल तक , कई दशकों तक चलता रहा । उस दौरान में हमारे देश में कई महानुभावों ने उसमें हिस्सा लिया । कई लोगों ने आजादी नहीं देखी उससे पहले ही चल बसे । कई लोगों ने आजादी देखी आजादी में खुद भी उनका हाथ रहा

और आजादी के बाद भी रहा । वो सब हमारे लिए पूज्यनीय हैं, बन्दनीय हैं । आपस में उनके कई झगड़े चले बाद में । अलग-अलग पार्टियां बनीं । एक दूसरे से बिछुड़ गये । यह तो जम्हूरियत में होता है । लेकिन हम हम उनकी देशभक्ति के बारे में और स्वतन्त्रता संग्राम में जो उनकी भूमिका थी उस के बारे में उनको नमन करते हैं, उनकी हज्जत करते हैं । यहां पार्टी की कोई बात नहीं है ।

इस साल योगायोग ऐसा है, संजोग ऐसा है कि एक तो एक सौ पच्चीस वां वर्ष हम मना रहे हैं महात्मा गांधी का बहुत बड़ा कार्यक्रम हमने बनाया है, गांधी जी ने जो रास्ता दिखाया था उस रास्ते पर चलते हुए क्या क्या कार्यक्रम हो सकते हैं लोगों के कल्याण के लिए, उनका कार्यक्रम बना । साथ ही साथ अगले सितम्बर में, आने वाले महीने में आचार्य विनोबा भावे की सेंटीनरी, उनकी शतजयंती आने वाली है । उसे भी हम बड़े पैमाने पर मनाना चाहते हैं । आचार्य विनोबा भावे भी गांधी तत्व में, गांधी के रास्ते पर बहुत बड़ा इन्कलाब लाने वालों में से एक हैं । उनको आज भी हम याद करते हैं । उनकी विद्वता और जो ऑरिजनल, मौलिक विचार की जो शक्ति उनकी थी और उस विचार को कार्यान्वित करने की जो शक्ति थी वो हममें शतांश भी आ जाए तो हमारा कल्याण हो जाएगा । वो हम मनाना चाहेंगे ।

फिर इसके बाद रफी साहब, रफी अहमद किदवई उनकी भी सेंटनरी चल रही है । उसकी भी एक कमेटी बनी है, उसके भी कार्यक्रम हैं । और उन्हें भी हम अच्छीतरह से हमारे नौजवानों को समझाने के लिए उनके सामने नमूना पेश करने के लिए करने वाले हैं । फिर लोकनायक जयप्रकाश नारायण उनकी एक मैमोरियल कमेटी है । कई साल से चल रही है । लेकिन इस साल उसकी गतिविधियां हम नये सिरे से बनाने वाले हैं और बढ़ाने वाले हैं क्योंकि उन्होंने भी हमारे देश को एक रास्ता दिखाया था अपने ढंग से । इसमें कोई शक नहीं है कि कई रास्ते हो सकते हैं एक ही लक्ष्य का साधन करने के लिए उन्होंने भी एक रास्ता दिखाया टोटल रिव्यूलयूशन का दिखाया । उसको

हमने पढ़ा, उसका अध्ययन किया, लाखों इस देश के नौजवानों ने और उन लोगों ने अध्ययन किया वो मामूली कोई व्यक्तित्व नहीं था उनका बहुत बड़ा व्यक्तित्व था । तो उनको भी उनकी भी हम इज्जत करना चाहते हैं । उन गतिविधियों को हम बढ़ाना चाहते हैं ।

फिर मोरारजी भाई देसाई अगले साल फरवरी में उनका 100वां वर्ष लगने वाला है । अभी 99 वर्ष के हो गये हैं वो । वो भी बड़े देशभक्त इतना त्याग उन्होंने किया और बाद में भी प्रधानमंत्री भी बने लेकिन पदों की बात छोड़िए व्यक्तित्व को देखिए ऐसा व्यक्तित्व शायद ही आपको और जगह मिल सके । एक विलक्षण व्यक्तित्व उनका है । मैं चाहता हूं कि अगले साल जब उनका 100वां वर्ष चलेगा हम उनकी शतजयंती मनाएं ।

तो इस प्रकार कई जयंतियां हम मनाने वाले हैं । इस लिए कि कई तरह के हमारे महानायक, महानेता हुए हैं । उनके अपने अपने मतभेद हो सकते हैं, दृष्टिकोण में, कार्यक्रम में । और कई तरह के मतभेद हो सकते हैं । लेकिन हमारे लिए वो सब प्रातर्वन्दनीय हैं । इसलिए इन सबकी जयंतियां हम मनाना चाहते हैं । ताकि लोगों को पता चला कि कैसे कैसे लोग थे जिन्होंने आजादी हमें दिलाई और इस आजादी को निभा कर रखने के लिए मजबूत रखने के लिए हमें क्या करना है । यह सबक लोगों को सीखना चाहिए । यह शिक्षा लोगों को मिलनी चाहिए ।

मैं आप, मैंने आपका बहुत समय लिया लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि कई बातें छूट गयी हैं । एक छोटे से एक घण्टे में या 45 मिनट में सारी बातें आ नहीं सकती हैं । लेकिन आपका हमारा साथ है । जब कभी आप मिलेंगे मौका मिलेगा तो और कई कार्यक्रमों को आपके सामने रखना चाहूंगा । जो कार्यक्रम छूट गये हैं वो ऐसी बात नहीं कि हमारे पास नहीं है। कई कार्यक्रम हैं जिनका ब्यौरा फिरसे देने में बहुत देर लगेगी । इसलिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूं और यह आपको बताना चाहता हूं कि देश तरक्की की राह पर आगे बढ़ रहा है । इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है । हम सब एक नई

एक व्यक्ति में नहीं बल्कि देश के भविष्य में हमारी निष्ठा होनी चाहिए । और है । करोड़ों लोगों में यह बात मैं देखता हूं जहां कहीं और मुझे बड़ी खुशी होती है कि आने वाली नस्लों के हाथ में यह देश बिल्कुल ही सुरक्षित रहेगा । आने वाले नेतृत्व के हाथों में सुरक्षित रहेगा हमारा इतना ही काम है कि इसके इसको सुरक्षित ढंग से रखें और अच्छी हालत में औरों के हाथों में सौंपें । यही मेरा सबसे बड़ा कर्तव्य होगा । मैं आपको बताना चाहता हूं कि इस कर्तव्य को निभाने में मैं कोई कसर बाकी नहीं रखूंगा चाहे इससे मुझे कितना भी कष्ट हो । कोई भी हो मैं यह काम करके रहूंगा ।

बहुत बहुत धन्यवाद । अब आप मेरे साथ तीन बार जय हिन्द का नारा लगाइए । जय हिन्द (जन समूह) यहीं और जोर से जय हिन्द (जन समूह) जय हिन्द (जन समूह) बहुत बहुत धन्यवाद ।